देव–पूजा में विहित एवं निषिद्ध पत्र–पुष्प

पञ्चदेव–पूजा में गणपति, गौरी, विष्णु, सूर्य और शिव की पूजा की जाती है। यहाँ इन देवी–देवताओं के लिये विहित और निषिद्ध पत्र–पुष्प आदि का संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है–

गणपति के लिये विहित पत्र–पुष्प

गणेशजी को तुलसी छोड़कर सभी पत्र–पुष्प प्रिय हैं। अतः सभी अनिषिद्ध पत्र–पुष्प इन पर चढ़ाये जाते हैं।[1] गणपति को दूर्वा अधिक प्रिय है (आचारेन्दुः पृ. 371)। अतः इन्हें सफेद या हरी दूर्वा अवश्य चढ़ानी चाहिये। दूर्वा के अग्रभाग में तीन या पाँच पत्ती होनी चाहिये[2]। गणपति पर तुलसी कभी न चढ़ायें। शास्त्रों में लिखा है कि, **'न तुलस्या गणाधिपम्'** (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 12) अर्थात् तुलसी से गणेशजी की पूजा कभी न की जाय। कार्तिक–माहात्म्य में भी कहा है कि **'गणेशं तुलसीपत्रैर्दुर्गां नैव तु दूर्वया'** (अनुष्ठानप्रकाशः पृ. 12; पुरश्चर्यार्णय पृ. 232 पर भी इसी प्रकार का कथन है।), अर्थात् गणेशजी की तुलसीपत्र से और दुर्गा की दूर्वा से पूजा न करें। गणपति को नैवेद्य में लड्डू अधिक प्रिय हैं।[3]

देवी के लिये विहित पत्र–पुष्प

भगवान् शंकर की पूजा में जो पत्र–पुष्प विहित हैं, वे सभी भगवती गौरी को भी प्रिय हैं। अपामार्ग उन्हें विशेष प्रिय है। शंकरजी पर चढ़ाने के लिये जिन फूलों का निषेध है तथा जिन फूलों का नाम नहीं लिया गया है, वे भी भगवती पर चढ़ाये जाते हैं।[4] जितने लाल फूल हैं वे सभी भगवती को अभीष्ट हैं तथा समस्त सुगन्धित श्वेत फूल भी भगवती को विशेष प्रिय हैं।[5]

बेला, चमेली, केसर, श्वेत और लाल फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा,

---

1– **तुलसीं वर्जयित्वा सर्वाण्यपि पत्रपुष्पाणि गणपतिप्रियाणि ।**
(नित्यकर्म–पूजाप्रकाश पृ. 352 में आचारभूषण का वचन)

2– **हरिताः श्वेतवर्णा वा पञ्चत्रिपत्रसंयुताः । दूर्वाङ्कुरा मया दत्ता एकविंशतिसम्मिताः ।।**
(नित्यकर्म–पूजाप्रकाश पृ. 352 में गणेशपुराण का वचन)

3 – **गणेशो लड्डुकप्रियः** (आचारेन्दुः पृ. 167)

4 – **यानि पुष्पाणि चोक्तानि शङ्करस्यार्चने पुरा । तानि गौर्याः प्रशस्तानि त्वपामार्गं विशेषतः ।।**
शिवार्चने निषिद्धानि पत्रपुष्पफलानि च । तानि देव्याः प्रशस्तानि अनुक्तानि विशेषतः ।।
(आचारेन्दुः पृ. 159)

5 – **नित्यं गौर्याः प्रशस्तानि रक्तपुष्पाणि सर्वदा ।**
शुक्लान्यपि च सर्वाणि गन्धवन्ति स्मृतानि वै । (आचारेन्दुः पृ. 160 पर पारिजात का कथन)

मौलसिरी, मदार, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम और अपराजित (शंखपुष्पी) आदि के फूलों से देवी की भी पूजा की जाती है।[1]

इन फूलों में आक और मदार–इन दो फूलों का निषेध भी मिलता है–

'देवीनामर्कमन्दारौ .... (वर्जयेत्)'(आचारेन्दुः पृ. 159)। अतः ये दोनों विहित भी हैं और प्रतिषिद्ध भी हैं। जब अन्य विहित फूल न मिलें तब इन दोनों का उपयोग करें।[2] दुर्गा से भिन्न देवियों पर इन दोनों को न चढ़ायें। किंतु दुर्गाजी पर चढ़ाया जा सकता है, क्योंकि दुर्गा की पूजा में इन दोनों का विधान है।[3]

शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास), गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार, शल्लकी, माधवी आदि लताएँ, कुश की मंजरियाँ, बिल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल[4]–ये फूल भगवती को प्रिय हैं।

आक और मदार की तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित–प्रतिषिद्ध

1– **ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैर्मल्लिकाजातिकुङ्कुमैः ।।**
सितरक्तैश्च कुसुमैस्तथा पद्मैश्च पाण्डुरैः ।
किंशुकैस्तगरैश्चैव किंकिरातैः सचम्पकैः ।।
बकुलैश्चैव मन्दारैः कुन्दपुष्पैस्तिरीटकैः ।
करवीरार्कपुष्पैश्च शैंशिपैश्चापराजितैः ।।
(आचारेन्दुः पृ. 159, थोड़े परिवर्तन के साथ वीरमि. पू. प्र. पृ. 315 पर भी)

2– **अर्कपुष्पविधानं तु विहितालाभे द्रष्टव्यम्। देवीनामर्कमन्दाराविति निषेधात्।**
(वीरमि. पू. प्र. पृ. 315)

3 – **अर्कमन्दारनिषेधो दुर्गेतरदेवीविषयः। दुर्गापूजाधिकारे तयोः पाठात्।** (आचारेन्दुः पृ 159)
इसी आशय का श्लोक वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 315 पर भी पाया जाता है।

4 – **मल्लिकामुत्पलं पुष्पं शमीं पुन्नागचम्पकम् ।**
अशोकं कर्णिकारं च द्रोणपुष्पं विशेषतः ।। (आचारेन्दुः पृ0 159)
धत्तूरकातिरिक्तैश्च बन्धूकागस्तिसम्भवैः ।
मदनैः सिन्दुवारैश्च सुरभीभिर्बकैस्तथा ।।
लताभिर्ब्रह्मवृक्षस्य दूर्वाङ्कुरैः सकोमलैः ।
मञ्जरीभिः कुशानां च बिल्वपत्रैः सुशोभनैः ।।
.....केतकीं चातिमुक्तं च बन्धूकं बहुलान्यपि।
कर्णिकारः कदम्बश्च सिन्दुवारः समृद्धये।।
पुन्नागश्चम्पकश्चैव यूथिका वनमल्लिकाः ।
तगरार्जुनमल्ली च बृहती शतपत्रिका ।। (वीरमि. पू. प्र. पृ.. 315 – 316)
विशेष – इन श्लोकों में जो फूल पहले आ चुके हैं, उनका हिंदी में उल्लेख नहीं किया गया है।

हैं अर्थात् ये शास्त्रों से विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं।[1] विहित-प्रतिषिद्ध के सम्बन्ध में तत्त्वसागरसंहिता का कथन है कि जब शास्त्रों से विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलों से पूजा कर लेनी चाहिये।[2]

शिव-पूजन के लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान् शंकर पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्त्व है। बतलाया जाता है कि तपःशील सर्वगुणसम्पन्न वेद में निष्णात किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण दान[3] करने पर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान् शंकर पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है।[4] कौन-कौन पत्र-पुष्प शिव के लिये विहित हैं और कौन-कौन निषिद्ध हैं, इनकी जानकारी अपेक्षित है। अतः उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है-

पहली बात यह है कि भगवान् विष्णु के लिये जो-जो पत्र और पुष्प विहित हैं, वे सब भगवान् शंकर पर भी चढ़ाये जाते हैं। केवल केतकी अर्थात् केवड़े का निषेध है।[5]

शास्त्रों ने कुछ फूलों के चढ़ाने से मिलनेवाले फल का तारतम्य बतलाया है, जैसे दस सुवर्ण-माप के बराबर सुवर्ण-दान का फल एक आक के फूल को चढ़ाने से मिल जाता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हजार कनेर के फूलों के चढ़ाने की अपेक्षा एक बिल्वपत्र से फल मिल जाता है और हजार बिल्वपत्रों की अपेक्षा एक गूमाफूल(द्रोण-पुष्प) श्रेष्ठ होता है। इसी तरह हजार गूमा से बढ़कर एक चिचिड़ा, हजार चिचिड़ों(अपामार्गों) से बढ़कर एक कुश का फूल, हजार कुश-पुष्पों से बढ़कर एक शमी का पत्ता, हजार शमी के पत्तों से बढ़कर एक नीलकमल का पत्ता, हजार नीलकमल के पत्तों से बढ़कर एक धतूरा, हजार धतूरों से बढ़कर एक शमी का फूल होता है। अन्त में बतलाया गया है कि समस्त फूलों की जातियों में सबसे बढ़कर नीलकमल होता है।[6] (वीर मि. पू. प्र. पृ. 210)

भगवान् व्यास ने कनेर की कोटि में चमेली, मौलसिरी, पाटला, श्वेतमदार, श्वेतकमल, शमी के फूल और बड़ी भटकटैया को रखा है। इसी तरह धतूरे की कोटि में नागचम्पा और पुंनाग

1- तिलकं मालती बाणस्तुलसी भृङ्गराजकम् ।
तमालं शिवदुर्गार्थं निषिद्धविहितं भवेत् ॥ (आचारेन्दुः पृ. 158)

2- विहितप्रतिषिद्धैस्तु विहितालाभतोऽर्चयेत् । (नित्यकर्म-पू. प्र. पृ. 355)

3- एक सुवर्ण=सोलह माशा या एक कर्ष ।

4- तपःशीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे ॥
दत्त्वा सुवर्णस्य शतं तत्फलं कुसुमस्य च । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 210)

5- विष्णोर्यानीह चोक्तानि पुष्पाण्यपि च पत्रिकाः ।
केतकीपुष्पमेकं तु विना तान्यखिलान्यपि ॥
शस्तान्येव सुरश्रेष्ठ शङ्कराराधनेऽपि हि । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 210-211 तथा आचारेन्दुः पृ. 157)

6- अर्कपुष्पे तथैकस्मिन् शिवाय विनिवेदिते॥
....
धत्तूरकसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते।
सर्वासां पुष्पजातीनां प्रवरं नीलमुत्पलम् ॥ (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 210)

को माना है।[1]

शास्त्रों ने भगवान् शंकर की पूजा में मौलसिरी(बक या बकुल) के फूल को भी अधिक महत्त्व दिया है।[2]

भविष्यपुराण ने भगवान् शंकर पर चढ़ाने योग्य और भी फूलों के नाम गिनाये हैं-

करवीर(कनेर), मौलसिरी, धतूरा, पाढर[3], बड़ी कटेरी, कुरैया, कास, मन्दार, अपराजिता, शमी का फूल, कुब्जक, शंखपुष्पी, चिचिडा, कमल, चमेली, नागचम्पा[4], चम्पा, खस, तगर, नागकेसर, किंकिरात(करंटक अर्थात् पीले फूलवाली कटसरैया), गूमा, शीशम, गूलर, जयन्ती, बेला, पलाश, बेलपत्ता, कुसुम्भ-पुष्प, कुङ्कुम[5] अर्थात् केसर, नीलकमल और लाल कमल। जल एवं स्थल में उत्पन्न जितने सुगन्धित फूल हैं, सभी भगवान् शंकर को प्रिय हैं।[6]

शिवार्चा में निषिद्ध पत्र-पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, बकुल (मौलसिरी), कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, केतकी, बसंत ऋतु में खिलनेवाला कंद विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, शिरीष, सर्ज और दोपहरिया के फूल भगवान् शंकर पर नहीं चढ़ाने चाहिये। 'वीरमित्रोदय' में इनका संकलन किया गया है[7]।

1- **करवीरसमा ज्ञेया जातीबकुलपाटलाः ।**
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मं च तत्समम् ।।
शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमुच्यते ।
नागचम्पकपुन्नागौ धत्तूरकसमौ स्मृतौ ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 211)

2- सत्यं सत्यं पुनः सत्यं शिवं स्पृष्ट्वेदमुच्यते ।
बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चनमुत्तमम् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 211)

3- 'पाटला' का अर्थ 'पाढर' होता है । कुछ लोग इसका अर्थ 'गुलाब' बतलाते हैं।

4- मूलमें 'काञ्चनम्' पद है । अमरकोषकार ने बतलाया है कि स्वर्ण के जितने नाम हैं वे 'नागचम्पा' फूल के वाचक हैं। अतः 'काञ्चन' का अर्थ नागचम्पा होता है -**'काञ्चनाह्वयः'** (2/5/778)

5- **'.......अथ कुङ्कुमम् । काश्मीरजन्माग्निशिखं वरं बाह्लीकपीतनम्।'**
(अमरकोष, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी, 1987, 2/7/1321)

6- वीरमित्रोदयः पू. प्र.(पृ. 212)

7- कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम् ।।
तिन्तिणी बकुलं कोष्ठं कपित्थं गृञ्जनं तथा ।
बिभीतकं च कार्पासं श्रीपर्णीपत्रकण्टकम् ।।
शाल्मलीदाडिमीवर्ज्जं धातकी शङ्करार्चने ।
केतकी चातिमुक्तं च कुन्दो यूथी मदन्तिका ।
शिरीषसर्जबन्धूककुसुमानि विवर्जयेत् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 216)

कदम्ब, बकुल और कुन्द पर विशेष विचार

इन पुष्पों का कहीं विधान और कहीं निषेध मिलता है। अतः विशेष विचार द्वारा निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है।

कदम्ब – शास्त्र का एक वचन है – **'कदम्बकुसुमैः शम्भुमुन्मत्तैः सर्वसिद्धिभाक्'** (वी. मि. पू. प्र. पृ. 214)। अर्थात् कदम्ब और धतूरे के फूलों से पूजा करने से सारी सिद्धियाँ मिलती हैं । शास्त्र का दूसरा वचन मिलता है –

अत्यन्तप्रतिषिद्धानि कुसुमानि शिवार्चने।
कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम्।। (वी. मि. पू. प्र. पृ. 216)

अर्थात् कदम्ब तथा फल्गु (गन्धहीन आदि) के फूल शिव के पूजन में अत्यन्त निषिद्ध हैं। इस तरह एक वचन से कदम्ब का शिवपूजन में विधान और दूसरे वचन से निषेध मिलता है, जो परस्पर विरुद्ध प्रतीत होता है।

इसका परिहार वीरमित्रोदयकार ने कालविशेष के द्वारा इस प्रकार किया है। इनके कथन का तात्पर्य यह है कि कदम्ब का जो विधान किया गया है, वह केवल भाद्रपदमास – मास – विशेष में। इस पुष्प – विशेष का महत्त्व बतलाते हुए देवीपुराण में लिखा है –

'कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा।' (वी. मि. पू. प्र. पृ. 214)

अर्थात् 'भाद्रपदमास में कदम्ब और चम्पा से शिव की पूजा करने से सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं।' इस प्रकार भद्रपदमास में 'विधि' चरितार्थ हो जाती है और भाद्रपदमास से भिन्न मासों में निषेध चरितार्थ हो जाता है। दोनों वचनों में कोई विरोध नहीं रह जाता।

'सामान्यतः कदम्बकुसुमार्चनं यत्तत् वर्षर्तुविषयम्।
अन्यदा तु निषेधः । तेन न पूर्वोत्तरवाक्यविरोधः।' (वी. मि. पू. प्र. पृ. 216)

बकुल (मौलसिरी) – यही बात बकुल-सम्बन्धी विधि-निषेध पर भी लागू होती है। 'आचारेन्दुः' में 'बक' का अर्थ 'बकुल' किया गया है और 'बकुल' का अर्थ है – 'मौलसिरी'। शास्त्र का एक वचन है – **'बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चनमुत्तमम्'** (वी. मि. पू. प्र. पृ. 211)। तथा दूसरा वचन है – **'बकुलैर्नार्चयेद् देवम्।'** (वी. मि. पू. प्र. पृ. 216)

पहले वचन में मौलसिरी का शिवपूजन में विधान है और दूसरे वचन में निषेध । इस प्रकार आपाततः पूर्वापर – विरोध प्रतीत होता है। इसका भी परिहार कालविशेष द्वारा हो जाता है, क्योंकि मौलसिरी चढ़ाने का विधान सायंकाल किया गया है – **'सायाह्ने बकुलं शुभम्।'** (वी. मि. पू. प्र. पृ. 214) इस तरह सायंकाल में विधि चरितार्थ हो जाती है और भिन्न समय में निषेध चरितार्थ हो जाता है।

कुन्द – कुन्द – फूल के लिये भी उपर्युक्त पद्धति व्यवहरणीय है। माघ महीने में भगवान् शंकर पर कुन्द चढ़ाया जा सकता है, शेष महीनों में नहीं। वीरमित्रोदयकार ने लिखा है –

कुन्दपुष्पस्य निषेधेऽपि माघे निषेधाभावः। (वी. मि. पू. प्र. पृ. 215)

विष्णु–पूजन में विहित पत्र–पुष्प

भगवान् विष्णु को तुलसी बहुत प्रिय है।[1] एक ओर रत्न, मणि तथा स्वर्णनिर्मित बहुत से फूल चढ़ाये जायँ और दूसरी ओर तुलसीदल चढ़ाया जाय तो भगवान् तुलसीदल को ही पसंद करेंगे। सच पूछा जाय तो ये तुलसीदल की सोलहवीं कला की भी समता नहीं कर सकते।[2] भगवान् को कौस्तुभ भी उतना प्रिय नहीं है, जितना कि तुलसीपत्र–मंजरी।[3] काली तुलसी तो प्रिय है ही किंतु गौरी तुलसी तो और भी अधिक प्रिय है।[4] भगवान् ने श्रीमुख से कहा है कि यदि तुलसीदल न हो तो कनेर, बेला, चम्पा, कमल और मणि आदि से निर्मित फूल भी मुझे नहीं सुहाते।[5] तुलसी से पूजित शिवलिङ्ग या विष्णु की प्रतिमा के दर्शन–मात्र से ब्रह्महत्या भी दूर हो जाती है।[6] एक ओर मालती आदि की ताजी मालाएँ हों और दूसरी ओर बासी तुलसी हो तो भगवान् बासी तुलसी को ही अपनायेंगे।[7]

शास्त्र ने भगवान् पर चढ़ाने योग्य पत्रों का भी परस्पर तारतम्य बतलाकर तुलसी की सर्वातिशायिता बतलायी है, जैसे कि चिचिड़े की पत्ती से भँगरैया की पत्ती अच्छी मानी गयी है तथा उससे अच्छी खैर की और उससे अच्छी शमी की। शमी से दूर्वा, उससे अच्छा कुश, उससे अच्छी

1– **अत्यन्तवल्लभा सा हि शालग्रामाभिधे हरौ ।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 43)

2– **मणिकाञ्चनपुष्पाणि तथा मुक्तामयानि च ।**
तुलसीदलमात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 42 पर स्कन्दपुराण का वचन)

3 – **तावद्गर्जन्ति रत्नानि कौस्तुभादीनि भूतले ।**
यावन्न प्राप्यते कृष्णतुलसीपत्रमञ्जरी ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 42)

4 – **श्यामापि तुलसी विष्णोः प्रिया गौरी विशेषतः ।**
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 43)

5 – **करवीरप्रसूनं वा मल्लिका वाथ चम्पकम् ।**
उत्पलं शतपत्रं वा पुष्पेष्वन्यतमं तु वा ।।
सुवर्णेन कृतं पुष्पं राजतं रत्नमेव वा ।।
मम पादाब्जपूजायामनर्हं भवति ध्रुवम् ।
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 43)

6 – **लिङ्गमभ्यर्चितं दृष्ट्वा प्रतिमां केशवस्य हि ।**
तुलसीपत्रनिकरैर्मुच्यते ब्रह्महत्यया ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 45)

7 – **त्यक्त्वा तु मालतीपुष्पं पुष्पाण्यन्यानि च प्रभुः ।**
गृह्णाति तुलसीं शुष्कामपि पर्युषितां प्रभुः ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 49)

दौना की, उससे अच्छी बेल की पत्ती को और उससे भी अच्छा तुलसीदल को माना गया है।[1]

नरसिंहपुराण में फूलों का तारतम्य बतलाया गया है। कहा गया है कि दस स्वर्ण-सुमनों का दान करने से जो फल प्राप्त होता है, वह एक गूमा के फूल चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है। इसके बाद उन फूलों के नाम गिनाये गये हैं, जिनमें पहले की अपेक्षा अगला उत्तरोत्तर हजार गुणा अधिक फलप्रद होता जाता है, जैसे-गूमा के फूल से हजार गुना बढ़कर एक खैर, हजारों खैर के फूलों से बढ़कर एक शमी का फूल, हजारों शमी के फूलों से बढ़कर एक मौलसिरी का फूल, हजारों मौलसिरी पुष्पों से बढ़कर एक नन्द्यावर्त, हजारों नन्द्यावर्तों से बढ़कर एक कनेर, हजारों कनेर के फूलों से बढ़कर एक सफेद कनेर, हजारों सफेद कनेर से बढ़कर कुश का फूल, हजारों कुश के फूलों से बढ़कर वनवेला, हजारों वनवेला के फूलों से एक चम्पा, हजारों चम्पाओं से बढ़कर एक अशोक, हजारों अशोक के पुष्पों से बढ़कर एक वासन्ती, हजारों वासन्तियों से बढ़कर एक गोजटा, हजारों गोजटाओं के फूलों से बढ़कर एक मालती, हजारों मालती फूलों से बढ़कर एक लाल त्रिसंधि (फगुनिया), हजारों लाल त्रिसंधि फूलों से बढ़कर एक सफेद त्रिसंधि, हजारों सफेद त्रिसंधि फूलों से बढ़कर एक कुन्द का फूल, हजारों कुन्द-पुष्पों से बढ़कर एक कमल-फूल, हजारों कमल-पुष्पों से बढ़कर एक बेला और हजारों बेला-फूलों से बढ़कर एक चमेली का फूल होता है।[2]

निम्नलिखित फूल भगवान् विष्णु को लक्ष्मी की तरह प्रिय हैं । इस बात को उन्होंने स्वयं श्रीमुख से कहा है-

मालती, मौलसिरी, अशोक, कालीनेवारी(शेफालिका), बसंतीनेवारी(नवमल्लिका),

---

1- **अपामार्गदलं पुण्यं तस्माद् भृङ्गरजस्य च । तस्माच्च खादिरं श्रेष्ठं शमीपत्रं ततः परम् ।।**
दूर्वापत्रं ततः श्रेष्ठं ततश्च कुशपत्रकम् । ततो दमनकं श्रेष्ठं ततो बिल्वस्य पत्रकम् ।।
बिल्वपत्रादपि हरेस्तुलसीपत्रमुत्तमम् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 49)

2- **द्रोणपुष्पे तथैकस्मिन् माधवाय निवेदिते । दत्त्वा दश सुवर्णानि यत्फलं तदवाप्नुयात् ।।**
द्रोणपुष्पसहस्रेभ्यः खादिरं वै प्रशस्यते । खदिरपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते ।।
शमीपुष्पसहस्रेभ्यो बकपुष्पं विशिष्यते । बकपुष्पसहस्राद्धि नन्द्यावर्तो विशिष्यते ।।
नन्द्यावर्तसहस्राद्धि करवीरं विशिष्यते । करवीरस्य पुष्पाद्धि श्वेतं तत्पुष्पमुत्तमम् ।।
कुशपुष्पसहस्राद्धि वनमल्ली विशिष्यते । वनमल्लीसहस्राद्धि चाम्पकं पुष्पमुत्तमम् ।।
चाम्पकात् पुष्पसाहस्रादशोकं पुष्पमुत्तमम् । अशोकपुष्पसाहस्रात् वासन्तीपुष्पमुत्तमम् ।
वासन्तीपुष्पसाहस्रात् गोजटापुष्पमुत्तमम् । गोजटापुष्पसाहस्रान्मालतीपुष्पमुत्तमम् ।।
मालतीपुष्पसाहस्रात् त्रिसन्ध्यं रक्तमुत्तमम् । त्रिसन्ध्यरक्तसाहस्रात् त्रिसन्ध्यश्वेतकं वरम् ।।
त्रिसन्ध्यश्वेतसाहस्रात् कुन्दपुष्पं विशिष्यते । कुन्दपुष्पसहस्राद्धि शतपत्रं विशिष्यते ।।
शतपत्रसहस्राद्धि मल्लिकापुष्पमुत्तमम् । मल्लिकापुष्पसाहस्रात् जातीपुष्पं विशिष्यते ।।
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 50-51 पर नरसिंहपुराण का वचन)

आम्रात(आमड़ा), तगर, आस्फोत, बेला, मधुमल्लिका, जूही(यूथिका), अष्टपद, स्कन्द, कदम्ब, मधुपिंगल, पाटला, चम्पा, हृद्य, लवंग, अतिमुक्तक(माधवी), केवड़ा, कुरब, बेल, सायंकाल में फूलनेवाला श्वेत कमल(कह्लार) और अड़ूसा।[1]

कमल का फूल तो भगवान् विष्णु को बहुत ही प्रिय है। विष्णुरहस्य में बतलाया गया है कि कमल का एक फूल चढ़ा देने से करोड़ों वर्ष के पापों का भगवान् नाश कर देते हैं।[2] कमल के अनेक भेद हैं। उन भेदों के फल भी भिन्न भिन्न हैं। बतलाया गया है कि सौ लाल कमल चढ़ाने का फल एक श्वेत कमल के चढ़ाने से मिल जाता है तथा लाखों श्वेत कमलों का फल एक नीलकमल से और करोड़ों नीलकमलों का फल एक पद्म से प्राप्त हो जाता है। यदि कोई भी किसी प्रकार एक भी पद्म चढ़ा दे, तो उसके लिये विष्णुपुरी की प्राप्ति सुनिश्चित है।[3]

वामनपुराण में बलि के द्वारा पूछे जाने पर भक्तराज प्रह्लाद ने विष्णु के प्रिय कुछ फूलों के नाम बतलाये हैं– 'सुवर्णजाती(जाती), शतपुष्पा(शताह्वा), चमेली(सुमनाः), कुंद, कठचंपा(चारुपुट), बाण, चम्पा, अशोक, कनेर, जूही, पारिभद्र, पाटला, मौलसिरी, अपराजिता(गिरिशालिनी), तिलक,

---

1– मालतीबकुलाऽशोकशेफालीनवमल्लिकाः ।
आम्राततगरास्फोतामल्लिकामधुमल्लिकाः ॥
यूथिकाष्टपदं स्कन्दं कदम्बं मधुपिङ्गलम् ।
पाटला चम्पकं हृद्यं लवङ्गमतिमुक्तकम् ॥
केतकं कुरबं बिल्वं कह्लारं वासकं द्विजाः ।
पञ्चविंशतिपुष्पाणि लक्ष्मीतुल्यप्रियाणि मे ॥
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 56 पर विष्णुधर्मोत्तर का वचन)

2– कमलैकेन देवेशं योऽर्चयेत् कमलाप्रियम् ।
वर्षायुतसहस्रस्य पापस्य कुरुते क्षयम् ॥ (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 56)

3 – रक्तोत्पलशतेनापि यत्फलं पूजिते नृणाम् ।
श्वेतोत्पलेन चैकेन तत्फलं समवाप्नुयात् ॥
श्वेतानामेकलक्षेण यत्फलं पूजिते भवेत् ।
नीलोत्पलेन चैकेन तत्फलं समवाप्नुयात् ॥
नीलोत्पलायुतानां तु लक्षकोट्यवयुतायुतैः ।
समर्चिते हृषीकेशे यत्फलं देहिनां भवेत् ॥
तत्फलं समवाप्नोति पद्मेनैकेन पूजकः ।
किमन्यैर्बहुभिः पुष्पैर्नैवेद्यैर्वान्यसाधनैः ॥
पद्मेनैकेन सम्पूज्य कृष्णं विष्णुपुरं व्रजेत् ।
अवशेनापि चैकेन पद्मेन मधुसूदनम् ॥
यदा तदापि वाऽभ्यर्च्य नरो विष्णुपुरीं व्रजेत् ॥ (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 61)

अड़हुल, पीले रंग के समस्त फूल(पीतक) और तगर[1]।

पुराणों ने कुछ नाम और गिनाये हैं, जो नाम पहले आ गये हैं, उनको छोड़कर शेष नाम इस प्रकार हैं- अगस्त्य[2], आम की मंजरी[3], मालती, बेला, जूही(माधवी), अतिमुक्तक, यावन्ति, कुब्जई, करण्टक(पीली कटसरैया), धव(धातक), वाण(काली कटसरैया), बर्बरमल्लिका(बेला का भेद) और अड़ूसा।[4]

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में बतलाया गया है कि भगवान् विष्णु की श्वेत[5] एवं पीले[6] फूलों की प्रियता प्रसिद्ध है, फिर भी लाल फूलों में दोपहरिया[7](बन्धूक), केसर[8]-कुङ्कुम और अड़हुल के फूल उन्हें प्रिय हैं। अतः इन्हें अर्पित करना चाहिये। लाल कनेर और बर्रे भी भगवान् को प्रिय हैं।[9] बर्रे का फूल पीला-लाल होता है।

इसी तरह कुछ सफेद फूलों को वृक्षायुर्वेद लाल उगा देता है । लाल रंग होनेमात्र से वे

1- **जातीशताह्वा सुमनाः कुन्दं चारुपुटं तथा ।**
बाणं च चम्पकाशोकं करवीरं च यूथिका ।।
पारिभद्रं पाटला च बकुलं गिरिशालिनी ।
तिलकं जम्बुवनजं पीतकं तगरं तथा ।।
एतानि तु प्रशस्तानि कुसुमान्यच्युतार्चने । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 52)

2- **अगस्त्यवृक्षसम्भूतैः कुसुमैरसितैः सितैः ।**
येऽर्चयन्ति हि देवेशं तैः प्राप्तं परमं पदम् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 52)

3- **मञ्जर्यः सहकारस्य तथा देव जनार्दने ।।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

4- **मालती मल्लिका चैव यूथिका चातिमुक्तकः ।**
पाटला करवीरं च जपा यावन्तिरेव च ।।
कुब्जकस्तगरश्चैव कर्णिकारः कुरण्टकः ।
चम्पको धातकः कुन्दो बाणो बर्बरमल्लिका ।।
अशोकस्तिलकश्चम्पस्तथा चैवाटरूषकः ।
अमी पुष्पाकराः सर्वे शस्ताः केशवपूजने ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 52)

5- **श्वेतैः पुष्पैः समभ्यर्च्य सर्वान् कामानवाप्नुयात् ।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

6- **ऐश्वर्यं प्राप्नुयाल्लोके पीतैरेवं समर्चयन् ।।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

7- **बन्धुजीवस्य पुष्पाणि रक्तान्यपि निवेदयेत् ।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 54)

8- **कुङ्कुमस्य तु पुष्पाणि बन्धुजीवस्य चाप्यथ ।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

9- **अतिरिक्तैर्महापुण्यैः कुसुम्भैः करवीरकैः ।**
अर्चयित्वाच्युतं याति यत्रास्ते गरुडध्वजः ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 66)

अप्रिय नहीं हो जाते, उन्हें भगवान् को अर्पण करना चाहिये।[1] इसी प्रकार कुछ सफेद फूलों के बीच भिन्न-भिन्न वर्ण होते हैं। जैसे पारिजात के बीच में लाल वर्ण। बीच में भिन्न वर्ण होने से भी उन्हें सफेद फूल माना जाना चाहिये और वे भगवान् के अर्पण योग्य हैं।[2]

विष्णुधर्मोत्तर के द्वारा प्रस्तुत नये नाम ये हैं-तीसी[3], भूचम्पक[4], पुरन्ध्रि[5], गोकर्ण[6] और नागकर्ण। अन्त में विष्णुधर्मोत्तर ने पुष्पों के चयन के लिये एक उपाय बतलाया है। कहा है कि जो फूल शास्त्र से निषिद्ध न हों और गन्ध तथा रंग-रूप से संयुक्त हों उन्हें विष्णु भगवान् को अर्पण करना चाहिये।[7]

विष्णु के लिये निषिद्ध फूल

विष्णु भगवान् पर नीचे लिखे फूलों को चढ़ाना मना है-

आक, धतूरा, कांची, अपराजिता(गिरिकर्णिका), भटकटैया, कुरैया, सेमल, शिरीष, चिचिड़ा (कोशातकी), कैथ, लाङ्गुली, सहिजन, कचनार, बरगद, गूलर, पाकर, पीपर और अमड़ा(कपीतन)[8]।

1- **वृक्षायुर्वेदविधिना शुक्लं रक्तं कृतं च यत् ।**
तद्रक्तमपि दातव्यम्. . . . .।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 54)

2- **मध्येऽन्यवर्णो यस्य स्याच्छुक्लस्य कुसुमस्य च ।**
पुष्पं युक्तं तु विज्ञेयं मनोज्ञं केशवप्रियम् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 54)

3 - **अतसीकुसुमं तथा ।।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 54)

4 - **तथा भूचम्पकस्य च ।।** इसमें पत्ते न रहने पर भी जड़ से फूल निकलता है-
'भूचम्पकः यस्य पत्राभावेऽपि मूलात् पुष्पमुद्गच्छति'। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

5- **तथा पुरन्ध्रिपुष्पैर्यः कुर्यात् पूजां मधुद्विषः ।।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

6- **गोकर्णनागकर्णाभ्याम् . . . .।** (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 55)

7- **येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्धवर्णान्वितानि च ।**
तानि पुष्पाणि देयानि विष्णवे प्रभविष्णवे ।।
(विष्णुधर्मोत्तर का वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 56 पर कथन)

8- **नार्कं नोन्मत्तकं काञ्चीं तथैव गिरिकर्णिकाम् । न कण्टकारिकापुष्पमच्युताय निवेदयेत् ।।**
कौटजं शाल्मलीपुष्पं शैरीषं च जनार्द्दने । निवेदितं भयं शोकं निःस्वतां च प्रयच्छति ।।
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 60)
कोशातक्यर्कधत्तूरशाल्मलीगिरिकर्णिका । कपित्थलाङ्गुलीशिग्रुकोविदारशिरीषकैः ।।
अज्ञानात् पूजयेद् विष्णुं नरो नरकमाप्नुयात् । . . . .न्यग्रोधोदुम्बरप्लक्षसपिप्पलकपीतनैः ।।
कोविदारैश्च तत्पत्रैर्नैव विष्णुं प्रपूजयेत् ।
(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 69 में विष्णुरहस्य का वचन)

घर पर रोपे गये कनेर और दोपहरिया के फूल का भी निषेध है।[1]

सूर्य के अर्चन के लिये विहित पत्र-पुष्प

भविष्यपुराण में बतलाया गया है कि सूर्य भगवान् को यदि एक कनेर का फूल अर्पण कर दिया जाय तो सोने की दस अशर्फियाँ चढ़ाने का फल मिल जाता है।[2] फूलों की श्रेष्ठता का तारतम्य इस प्रकार बतलाया गया है-

हजार अड़हुल के फूलों से बढ़कर एक कनेर का फूल होता है, हजार कनेर के फूलों से बढ़कर एक बिल्वपत्र, हजार बिल्वपत्रों से बढ़कर एक 'पद्म' (सफेद रंग से भिन्न रंगवाला), हजारों रंगीन पद्म-पुष्पों से बढ़कर एक मौलसिरी, हजारों मौलसिरियों से बढ़कर एक कुश का फूल, हजार कुश के फूलों से बढ़कर एक शमी का फूल, हजार शमी के फूलों से बढ़कर एक नीलकमल, हजारों नील एवं रक्त कमलों से बढ़कर 'केसर और लाल कनेर' का फूल होता है।[3]

1- विष्णुधर्मोत्तर का एक वचन है -

करवीरस्य पुष्पाणि तथा धत्तूरकस्य च । कृष्णं च कुटजं चार्कं नैव देयं जनार्दने ॥

(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 60)

तात्पर्य यह कि करवीर, धतूर, काला कुटज तथा मदार का फूल विष्णु को नहीं चढ़ाना चाहिये। इसके विपरीत वचन इस प्रकार है -

करवीरकपुष्पेण रक्तेनाथ सितेन वा । मुचुकुन्दस्य चैकेन सम्पूज्य गरुडध्वजम् ॥

(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 62)

इसमें कनेर और मुचुकुन्द के फूल को विष्णु भगवान् पर चढ़ाने का विधान किया गया है। इस तरह परस्पर विरोध प्रतीत होता है । इसका समन्वय निबन्धकारों ने इस प्रकार किया है- निषेध-वचन में जो 'करवीर' शब्द आया है उसका तात्पर्य 'गृहरोपित करवीर' है, अर्थात् घर में रोपे गये करवीर-फूल को नहीं चढ़ाना चाहिये। इससे भिन्न कनेरों को तो चढ़ाना ही चाहिये । इस अभिप्राय का एक वचन स्वयं विष्णुधर्मोत्तर में मिलता है-

'न गृहे करवीरोत्थैः कुसुमैरर्चयेद्धरिम् ।' (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 59)

यहाँ कुछ पुष्प विहित-निषिद्ध हैं जिन्हें शास्त्रानुसार पूजन में अन्य पुष्पों के अभाव होने पर चढ़ाया जा सकता है।

2- **करवीरे नृपैकस्मिन्नकार्यं विनिवेदिते ।**
दत्त्वा दशसुवर्णस्य निष्कस्य लभते फलम् । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 255)

3- **जपापुष्पसहस्रेभ्यः करवीरं विशिष्यते । करवीरसहस्रेभ्यः बिल्वपत्रं विशिष्यते ॥**
बिल्वपत्रसहस्रेभ्यः पद्ममेकं विशिष्यते । वीर पद्मसहस्रेभ्यो बकपुष्पं विशिष्यते ।
बकपुष्पसहस्रेभ्यः कुशपुष्पं विशिष्यते ॥
कुशपुष्पसहस्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते । शमीपुष्पसहस्रेभ्यो नृप नीलोत्पलं वरम् ॥
रक्तोत्पलसहस्रेण नीलोत्पलशतेन च ॥
रक्तैश्च करवीरैश्च यस्तु पूजयते रविम् । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 255-256)

यदि इनके फूल न मिलें तो बदले में पत्ते चढ़ायें और पत्ते भी न मिलें तो इनके फल चढ़ायें।[1]

फूल की अपेक्षा माला में दुगुना फल प्राप्त होता है।[2]

रात में कदम्ब के फूल और मुकुर को अर्पण करें और दिन में शेष समस्त फूल । बेला दिन में और रात में भी चढ़ाना चाहिये।[3]

सूर्य भगवान् पर चढ़ाने योग्य कुछ फूल ये हैं- बेला, मालती, काश, माधवी, पाटला, कनेर, जपा, यावन्ति, कुब्जक, कर्णिकार, पीली कटसरैया(कुरण्टक), चम्पा, रोलक, कुन्द, काली कटसरैया(वाण), बर्बरमल्लिका, अशोक, तिलक, लोध, अरूषा, कमल, मौलसिरी, अगस्त्य और पलाश के फूल तथा दूर्वा।[4]

कुछ समकक्ष पुष्प

शमी का फूल और बड़ी कटेरी का फूल एक समान माने जाते हैं। करवीर की कोटि में चमेली, मौलसिरी और पाटला आते हैं। श्वेत कमल और मन्दार की श्रेणी एक है। इसी तरह नागकेसर, चम्पा, पुन्नाग और मुकुर एक समान माने जाते हैं।[5]

विहित पत्र

बेल का पत्र, शमी का पत्ता, भंगरैया की पत्ती, तमालपत्र, तुलसी और काली

1- अलाभेन तु पुष्पाणां पत्राण्यपि निवेदयेत् ।।
पत्राणामप्यलाभे तु फलान्यपि निवेदयेत् । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 257)

2- स्रग्भिश्च नृपशार्दूल तदेव द्विगुणं भवेत् ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 257)

3 - मुकुराणि कदम्बानि रात्रौ देयानि भानवे ।
दिवा शेषाणि पुष्पाणि दिवारात्रौ च मल्लिका ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 257)

4- मल्लिका मालती चैव दूर्वा काशोऽतिमुक्तकः ।
पाटला करवीरश्च जया यावन्तिरेव च ।।
कुब्जकस्तगरश्चैव कर्णिकारः कुरण्टकः ।
चम्पको रोलकः कुन्दो बाणो बर्बरमल्लिकाः ।।
अशोकस्तिलको लोध्रस्तथा चैवाटरूषकम् ।।
शतपत्राणि चान्यानि बकाह्वं च विशेषतः ।।
अगस्तिकिंशुकौ तद्वत्................. ।। (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 257)

5- शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमुच्यते ।
करवीरसमा ज्ञेया जातीबकुलपाटलाः ।
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्मं च तत्समम् ।।
नागचम्पकपुन्नागमुकुराश्च समाः स्मृताः । (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाशः पृ. 256)

तुलसी के पत्ते तथा कमल के पत्ते सूर्य भगवान् की पूजा में गृहीत हैं।[1]

सूर्य के लिये निषिद्ध फूल

गुंजा (कृष्णला), धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, तगर और अमड़ा- इन्हें सूर्य पर न चढ़ायें। 'वीरमित्रोदय' ने इन्हें सूर्य पर चढ़ाने का स्पष्ट निषेध किया है, यथा-

कृष्णलोन्मत्तकं काञ्ची तथा च गिरिकर्णिका ॥
न कण्टकारिपुष्पं च तथान्यद् गन्धवर्जितम् ।
देवीनामर्कमन्दारौ सूर्यस्य तगरं तथा ।
न चाम्रातकजैः पुष्पैरर्चनीयो दिवाकरः ॥ (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाश: पृ. 258)

फूलों के चयन की कसौटी-सभी फूलों का नाम गिनाना कठिन हैं। सब फूल सब जगह मिलते भी नहीं। अत: शास्त्र ने योग्य फूलों के चुनाव के लिये हमें एक कसौटी दी है कि जो फूल निषेध कोटि में नहीं हैं और रंग-रूप तथा सुगन्ध से युक्त हैं उन सभी फूलों को भगवान् को चढ़ाना चाहिये।

येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्धवर्णान्वितानि च ।
तानि पुष्पाणि देयानि भानवे लोकभानवे ॥

(वीरमित्रोदयपूजाप्रकाश: पृ. 258)

(यह लेख मुख्यत: गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित नित्यकर्म-पूजाप्रकाश तथा वीरमित्रोदयपूजाप्रकाश: पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा ही श्रेष्ठ तपस्या है तथा अहिंसा को ही मुनियों ने सदा श्रेष्ठ दान बताया है।

अहिंसा परमो धर्मो ह्यहिंसैव परं तपः।
अहिंसा परमं दानमित्याहुर्मुनयः सदा॥

(पद्ममहापु. स्वर्गखण्ड 31/27)

---

1. **बिल्वपत्रं शमीपत्रं पत्रं भृङ्गरजस्य च ॥**
तमालपत्रं च हरे सदैव तपनप्रियम् ।
तुलसी कालतुलसी तथा रक्तं च चन्दनम् ॥
केतकी पद्मपत्रं च सद्यस्तुष्टिकरं रवेः ॥ (वीरमित्रोदयपूजाप्रकाश: पृ. 257-258)

कहीं-कहीं पर बिल्वपत्र का निषेध भी मिलता है यथा-

न दूर्वया यजेद् दुर्गा बिल्वपत्रैर्दिवाकरम्॥ (पुरश्चर्यार्णव पृ. 232)

अत: बिल्वपत्र को विहित-प्रतिषिद्ध माना जा सकता है (आचारेन्दु: पृ. 372)। अर्थात् अन्य पुष्पों-पत्रों के अभाव में इसका प्रयोग करना चाहिये।